



मन क्रोध से भरा : मोदी

> 140 करोड़ भारतीयों को शर्मसार होना पड़ा > किसी गुनहगार को बरबांगे नहीं



नई दिल्ली, 20 जुलाई दोपहर तक के लिए स्थगित कर दी गयी है। इससे पहले पौर्ण मोदी ने आज सुबह 11 बजे से शुरू हो गया। कार्यवाही शुरू होते ही सड़क पर धुमान के मामले पर विपक्षी सासदों ने मणिपुर मुद्रे पर कहा, मरा हुवा आज पीड़ा से भरा है। मणिपुर के सासदों की कार्यवाही कल घटना की सभ्य समाज के लिए शर्मसार करने वाली घटना है।

पहली गिरफ्तारी, दोषियों को दे सकते हैं मृत्युदंड

इकाल, 20 जुलाई (एजेंसियां)। मणिपुर में पहली गिरफ्तारी की है। फिलहाल मामले में उठाने और कानून के अनुसार उचित कार्रवाई दो महिलाओं को नग करके धुमान की घटना पर गहन जाच चल रही है। हम यह सुनिश्चित करने को कहा है।

पीएम ने सभी अपराधियों के खिलाफ कार्रवाई की जाए, जिसमें मृत्युदंड की संभावना सख्त सख्त से सख्त कार्रवाई करने की बात की है।

सीएम ने बताया कि मामले में पहली गिरफ्तारी आज सुबह की गई है। वही, केंद्रीय गृह मंत्री की अपित शाह ने बरिन सिंह ने गुरुवार की मृत्युमंत्री एन बीरिन सिंह ने गुरुवार को कहा कि बीड़ियों सामने आने के तुरां बाद राज्य सरकार ने बीड़ियों का स्वातं संज्ञान लिया और जांच के आदेश दिए। उन्होंने कहा कि मणिपुर पुलिस ने कार्रवाई कर आज सुबह

पहली गिरफ्तारी, दोषियों को दे सकते हैं मृत्युदंड

पहली गिरफ्तारी की चरेट में है। फिलहाल मामले में उठाने और कानून के अनुसार उचित कार्रवाई करने को कहा है।

यह है मामला : मणिपुर इन दिनों जारी हिंसा की चरेट में है, लेकिन अब एक बीड़ियों को लेकर मणिपुर के पहाड़ी लोकों में तनाव फैल गया है जिसमें दो महिलाओं को नग करके धुमान की घटना सामने आई है। यह समाज के लिए शुरू हो गया है। उन्होंने कहा कि बीड़ियों के खिलाफ दूर कांगपोकी पीड़ा देते हुए। इसका बीड़ियों बुधवार को सोशल मीडिया पर वायरल हुआ। राज्य के लोगों की दूरदृश्य पर उत्तरांश लाने के लिए शुरू किए गए। मणिपुर ने कहा कि लोगों की दूरदृश्य पर उत्तरांश लाने के लिए शुरू किए गए। मणिपुर के लोगों की दूरदृश्य पर उत्तरांश लाने के लिए शुरू किए गए।

शाह का आदेश : अमित शाह ने गुरुवार को मणिपुर के महिलाओं को नग करके धुमान की घटना सामने आई है। वही, जो अपित शाह ने बरिन सिंह ने गुरुवार को कहा कि बीड़ियों सामने आने के तुरां बाद राज्य सरकार ने बीड़ियों का स्वातं संज्ञान लिया और जांच के आदेश दिए। उन्होंने कहा कि मणिपुर पुलिस ने कार्रवाई कर आज सुबह

पहली गिरफ्तारी, दोषियों को दे सकते हैं मृत्युदंड

पहली गिरफ्तारी की चरेट में है। फिलहाल मामले में उठाने और कानून के अनुसार उचित कार्रवाई करने को कहा है।

रखी मणिपुर पर चर्चा की मांग, मोदी ने दिया ये जवाब

नई दिल्ली, 20 जुलाई (एजेंसियां)। संसद का मानवाधिकार सत्र गुरुवार से शुरू हो गया है। उन्होंने कहा कि बीड़ियों के खिलाफ दूर कांगपोकी पीड़ा देते हुए। इस दूर कांगपोकी की चरेट में है। वही, जो अपित शाह ने बरिन सिंह ने गुरुवार को कहा कि बीड़ियों सामने आने के तुरां बाद राज्य सरकार ने बीड़ियों का स्वातं संज्ञान लिया और जांच के आदेश दिए। उन्होंने कहा कि मणिपुर पुलिस ने कार्रवाई कर आज सुबह

पहली गिरफ्तारी, दोषियों को दे सकते हैं मृत्युदंड

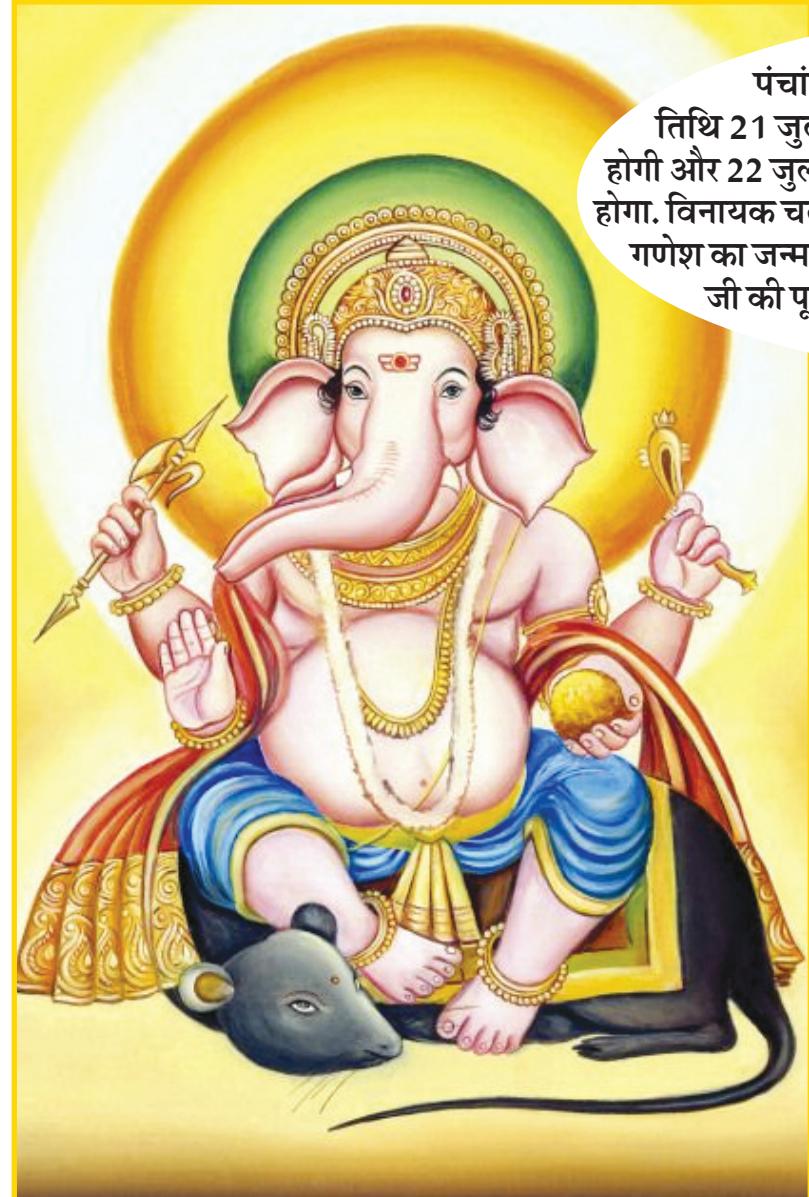
पहली गिरफ्तारी की चरेट में है। फिलहाल मामले में उठाने और कानून के अनुसार उचित कार्रवाई करने को कहा है।

राज्यसभा उपाध्यक्षों के नए पैनल का हुआ पुनर्गठन

राज्यसभा

अधिनायक की विनायक चतुर्थी कल

19 साल बाद बना है द्याया संयोग

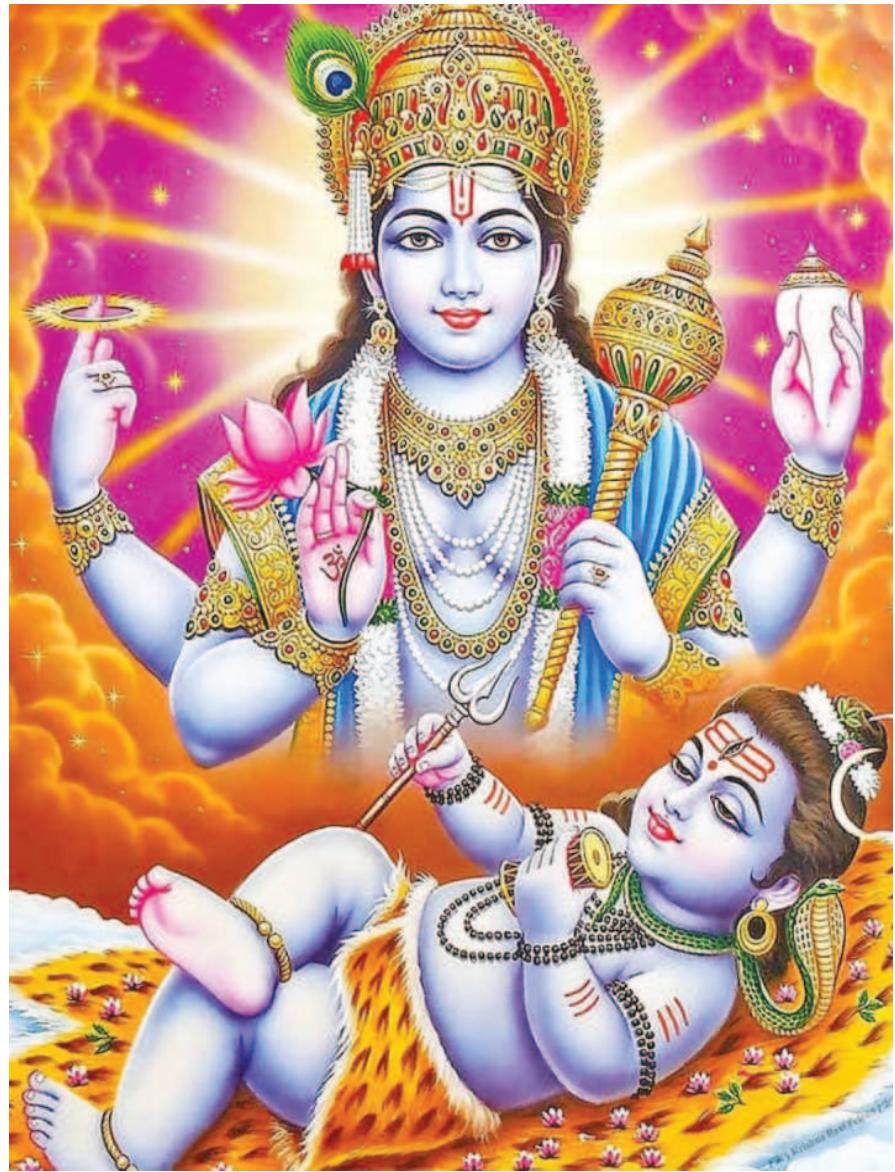


पंचांग के अनुसार अधिकमास की विनायक चतुर्थी तिथि 21 जुलाई 2023 को सुबह 06 बजकर 58 मिनट पर शुरू होगी और 22 जुलाई 2023 को सुबह 09 बजकर 26 मिनट पर इसका समापन होगा। विनायक चतुर्थी तिथि गणपति की जन्म तिथि है, जिन्होंने के अनुसार श्री गणेश का जन्म मध्यकाल में हुआ था, इसलिए विनायक चतुर्थी पर गणेश जी की पूजा दिन में की जाती है। गणेश पूजा मुहूर्त - सुबह 11.05 - दोपहर 01.50

अधिकरि का प्रिय महीना अधिकमास 18 जुलाई 2023 से शुरू हो रहा है। हिंदू कैलेंडर के अनुसार हर महीने में आमावस्या के बाद आने वाली शुक्ल पक्ष की चतुर्थी को विनायक चतुर्थी कहते हैं। सावन में अधिकमास की चतुर्थी 19 साल बाद आई है। यही वजह है कि इस साल अधिकमास की विनायक चतुर्थी बहुत महत्वपूर्ण मानी जा रही है। चतुर्थी तिथि के द्वारा गणपति जी है, वहीं अधिकमास विष्णु जी को समर्पित है, सावन शिव का प्रिय महीना है। ऐसे में सावन अधिकमास की चतुर्थी तिथि का व्रत करने वालों को इन तीनों देवताओं के आशीर्वाद असंभव हो जाते हैं। आइए जानते हैं अधिकमास विनायक चतुर्थी की डेट, मुहूर्त और महत्व। सावन अधिकमास की विनायक चतुर्थी 21 जुलाई 2023 शुक्रवार को है। इस दिन गणपति की पूजा करने से वर्षों को करियर में उन्नति मिलती है, नौकरीपेश और व्यापारियों के तरक्की के रास्ते खुल जाते हैं। बिना किसी विष्णु के हर कार्य में सफलता मिलती है। अधिकमास विनायक चतुर्थी महत्व

अधिकमास हर 3 साल बाद आता है। यही वजह है कि इस महीने के हर व्रत-ल्पोहार का विषेष महत्व है। ऐसा माना जाता है कि अधिकमास में किए गए धार्मिक कार्यों का किसी भी अन्य माह में किए गए पूजा-पाठ से 10 गुना अधिक फल मिलता है। पुण्यों के अनुसार अधिकमास की विनायक चतुर्थी पर गणपति जी की पूजा करने वालों को कभी धन की कमी नहीं होती। संतान प्राप्ति के लिए ये व्रत उत्तम फलदायी माना गया है। विनायक चतुर्थी व्रत के प्रभाव से हर संक और बाधा का नाश होता है। अधिकमास विनायक चतुर्थी पर गणेश विधि अधिकमास विनायक चतुर्थी पर दोपहर में पूर्व दिशा की ओर सुख करके भगवान गणपति की पूजा अर्चना 108 दूर्वा की पत्तियों से करें। गाय के थी का दोपहर जलाकर वरकुर्तुडय हुं मंत्र का 108 बार जाप करें। जाप के बाद पूजा के स्थान में रखे हुए जल का छिड़काव इन्हीं दूर्वा की पत्तियों से सारे घर में करें। मान्यता है इससे नकारात्मक ऊर्जा का नाश होता है और घर में खुशहाली आती है।

भगवान विष्णु के दिव्य अवतार



हिंदू धर्म में प्रमुख देवताओं में से एक भगवान विष्णु को ब्रह्मांड का संरक्षक और रक्षक माना जाता है। माना जाता है कि जब भी खतरा होता है तो संतुलन और धार्मिकता को बहाल करने के लिए वह विष्णु रूपों या अवतारों में पर्याप्त पर उतरे थे। इन अवतारों में विष्णुन् गुण होते हैं और अद्वितीय विशेषज्ञान होती हैं जो विशेष दिव्य उद्घाटनों को प्राप्त करती हैं। इस लेख में, हम भगवान विष्णु के बारह अवतारों का पता लगाएंगे, उनके महत्व, कहानियों और उनके द्वारा प्रदान की जाने वाली गहन शिक्षाओं का पता लगाएंगे।

भगवान राम - आदर्श राजा अवतार: सबसे श्रद्धेय अवतारों में से एक माना जाता है, भगवान राम धार्मिकता, भक्ति और धर्म का प्रतीक है। महाकाव्य रामायण में वर्णित उनकी कहानी अपने कर्त्ताओं को प्राप्त करने, नैतिक मूल्यों को बनाए रखने और बराइं पर अच्छाई की जीत के महत्व पर जोर देते हुए।

भगवान कृष्ण - दिव्य शिक्षक अवतार: भगवान विष्णु का पतला अवतार मत्स्य अपनी अधिकारी और धार्मिकता के लिए विशेष विशेषज्ञान दिव्य उद्घाटनों को प्राप्त करती हैं। इस लेख में, हम भगवान विष्णु के बारह अवतारों का पता लगाएंगे, उनके महत्व, कहानियों और उनके द्वारा प्रदान की जाने वाली गहन शिक्षाओं का पता लगाएंगे।

मत्स्य अवतार - मछली अवतार: भगवान विष्णु का पतला अवतार मत्स्य का अमरत्व का अमृत प्राप्त करने के लिए ब्रह्मांडीय सागर मंथन के द्वारा पर्यावरण का साथ दिया था। यह अवतार चुनौतियों के उन्मूलन पर जोर देता है।

कूर्म अवतार - कूर्मजी अवतार: कछुए कूर्म के रूप में भगवान विष्णु ने अमरत्व का अमृत प्राप्त करने के लिए ब्रह्मांडीय सागर मंथन के द्वारा पर्यावरण का साथ दिया था। यह अवतार चुनौतियों के उन्मूलन पर जोर देता है।

बुद्ध अवतार - बुद्धांशु अवतार: बुद्ध अवतार, भगवान विष्णु की एक अनूठी अधिव्यक्ति, अहिंसा, करुणा और ज्ञान की शिक्षाओं का प्रसार किया। यह अवतार आत्म-साक्षण्य और जन्मांशु और धर्मांशु के अंतर से मुक्ति के चक्र से मुक्ति के महत्व पर जोर देता है।

कलिक अवतार - उद्धरकर्ता अवतार: वर्षान ब्रह्मांडीय चक्र में अंतिम अवतार, कलिक अंभी तक दिखाई नहीं दिया है। भगवान विष्णु कलिक अवतार के अंत में कलिक के रूप में उद्धरण, अंभी के युग, धार्मिकता को बहाल करने और शान्ति और सद्बाव के एक नए युग में प्रवेश करने के लिए।

समाप्ति - भगवान विष्णु के बारह अवतार मत्स्य अवतार: समाप्ति भगवान विष्णु के बारह अवतार मत्स्य के बीच शाश्वत लडाई की गहरी समझ को प्रकट करते हैं। प्रत्येक अवतार एक अद्वितीय संदेश देता है और मूल्यवान सबक करता है जो मानवता को आधारित विकास और नैतिक जीवन की ओर मार्गदर्शन करता है।

नरसिंह अवतार - शेर-आदर्श अवतार: नरसिंह, आदर्शी और आधा शेर रूप, राक्षस राजा हिरण्यकश्यप को हराने के लिए उभरा, जिसने अजेयता का वरदान प्राप्त किया था। यह अवतार अहंकार के विनाश और बुराई पर अच्छाई की जीत का दावरण है।

वामन अवतार - बौन अवतार: वामन अवतार के बोने रूप वामन ने संतुलन बहाल करने के लिए अवतार लिया जो राक्षस राजा बलि एक अनिवार्य शासक बन गया। विष्णु ने बोने का वेश धारण कर तीन पा धूमि मांगी, जिससे संपूर्ण ब्रह्मांड ढक गया। यह अवतार विनाश और धर्मी शासन के महत्व को सिखाया है।

परशुराम अवतार - योद्धा ऋषि अवतार: परशुराम अवतार, योद्धा ऋषि अवतार, धूमि से धूमि और धर्मी शासन के लिए उठे। उन्होंने न्याय को बनाए रखने और कमज़ोरों

की गहरी शिक्षा और अधिकारी और अवधारणाओं का पता लगाएंगे। नैतिक जीवन की ओर धर्मी शासन के महत्व को सिखाया है।

वामांशु अवतार - योद्धा ऋषि अवतार: वामांशु अवतार के बारह अवतार विष्णु के अवतार के लिए उभरा, जिसने योग्य विवेक और धर्मी शासन के महत्व को सिखाया है। अंत में, भगवान विष्णु के अवतार के लिए विशेष धार्मिकता, भक्ति और धर्म का प्रतीक है।

बाहर कदम रखते ही चिलचिलाती गर्मी में रहता है यह मंदिर ठंडा

संयम में श्रद्धा नहीं, फिर क्यों धारे वेश



पढ़े लिखे वक्ता बने, काव्यों के कर्तार। संयम धर्म में श्रद्धा न जो, तो सब कुछ है बेकार।। संयम में श्रद्धा नहीं, फिर क्यों धारे वेश। दीप जले ना तैल बिन, क्यों लोचे तूं केश।। सम्यक श्रद्धा (दर्शन) के बिन, मिले न सम्पन्न ज्ञान। आये नहीं समकित धन, तो सब कुछ धूल समान।। सम्यम समझा एक है, अन समझा सब एक।। समझा तब ही जानिये, निम्न श्रद्धा विवेक।। कूद पड़ दरिया में क्या तूफान का पकड़ि है अगर तुमको यकीं, फज्जे खुदा हो जाएगा।। पढ़ाया न पिंगल फारसी, नहीं पढ़ाया स्वर छंद।। महामन नवकार ही सदा करे आनंद।। स्वच्छं चंद मत आग्रह तजी,

अधिक मास में दान-पूण्य करने की है परंपरा

मेष राशि के लोग धी, वृषभ राशि के लोग चावल और कुंभ राशि के लोग तेल का दान करें, जानिए 12 राशियों के लिए दान

अधिक मास में विवाह तय करना, सगाई करना, कोई जमीन, मकान, भूमि खरीदने के अनुबंध किए जा सकते हैं। इस महीने में किसी धार्मिक यात्रा पर जा सकते हैं, पूजा-पाठ के साथ ही दान-पूण्य भी करना चाहिए। दान राशि अनुसार दान करने के असर भी सकता है। दान किसी मंदिर में या जरूरतमंद लोगों को करना चाहिए। जानिए, राशि अनुसार किन चीजों का दान कर सकते हैं।



मेष- मालपुण, धी, घोडा, चांदी, लाल वस्त्र, केले, अनार, सोना, तांबा, भूमि, मूंगा, गेंहुं। वृश्चिक- सफेद कपड़े, चांदी, मालपुण, मावा, शकर, चावल, केले, गाय, मोती, वाहन। मिथुन- पन्ना, मूंग की दाल, सोना, तेल, सेवफल, मालपुण, गाय। **कर्क- मोती, चांदी, जल, तेल, सफेद कपड़े, भूमि, मालपुण, मावा, दूध, शकर, चावल।** सिंह- लाल कपड़े, तांबा, पीतल, सोना, चांदी, गेंहूं, मसूर, धार्मिक पुस्तकें, अनार, सेवफल, मालपुण। **कन्या- मूले कपड़े, चर्नी, दाल, घोडा, चावल, केले, बैल, गाय, हीरा, मोती, वाहन।** **तुला- सफेद कपड़े, चांदी, मालपुण, मावा, चर्नी, चावल, केले, बैल, गाय, हीरा, मोती, वाहन।</**

‘इंडिया’ में पीएम पद के 5 दबेदार

नई दिल्ली, 20 जुलाई (एक्स्प्रेस डेस्क)। बैंगलुरु में 17 और 18 जुलाई को दो दिन चली विपक्ष की मीटिंग में कुछ हासिल हुआ, तो वो है गठबंधन का नाम—इंडिया यानी इंडियन नेशनल डेवलपमेंट इन्क्लूसिव अलायंस। सबसे बड़ा सवाल बना ही रहा कि 2024 लोकसभा चुनाव में मोदी के समाने कौन होगा?

इंडिया में शामिल 26 पार्टियां अब मुंबई में मिलेंगी। इसी में तय होगा कि विपक्षी गठबंधन का चेहरा कौन होगा। अगली मीटिंग की तारीख भी तय नहीं है। सारी बातें 11 में बर की को-ऑर्डिनेशन कमेटी तय करेगी। अलायंस का दिल्ली में अलग आफिस भी होगा।

मीटिंग खत्म होने के बाद हुई प्रेस कॉन्फ्रेंस में विहार के सीएम नीतीश कुमार और लालू-तेजस्वी नहीं थे। हालांकि, नीतीश की पार्टी जदयू के अध्यक्ष ललन सिंह ने नाराजगी की खबरों को गलत बताया हालांकि, संकेत मिल आए कि अलायंस में एक बानाए रखना उचित नहीं होगा।

इससे पहले अलायंस का नाम इंडिया रखने पर भी नीतीश राजी नहीं थे। उन्होंने कहा था कि ये देश का नाम है। क्या ये नाम किसी पार्टी को दे सकते हैं?

नए गठबंधन के लोडर के अलायंस भी कई चीजें पर सहमति बनानी है, जैसे सीट शेयरिंग, कॉमन कैंडिडेट, विधानसभा चुनाव में आपसी तालमेल और

पश्चिम बंगाल, यूपी-बिहार में सीट शेयरिंग मुश्किल, कांग्रेस सबसे ज्यादा नुकसान में

रिजनल पार्टियों की महत्वांकनाशांग। फिर प्रधानमंत्री पद के दबेदारों की लिस्ट भी लबी है। शरद पवार, नीतीश कुमार, ममता बनर्जी, राहुल गांधी और अरविंद केजरीवाल इस में हो सकते हैं। हालांकि, कांग्रेस के एक सीनियर लीडर ने बताया कि 2024 के लोकसभा चुनाव में पार्टी 370 सीटों पर ही कैंडिडेट्स उत्तरीयों। 173 सीटों पर सहयोगी दलों को समर्थन दे सकती है। ऐसे हुआ तो पिछले 5 लोकसभा चुनाव यानी 1999, 2004, 2009, 2014 और 2019 में पहली बार होगा, जब कांग्रेस 400 से कम सीटों पर चुनाव लड़ेगी।

पार्टियों के साथ सीट शेयरिंग मुश्किल

अभी परिचय बंगाल में टीएमसी, तमिलनाडु में डीएमके, दिल्ली-पंजाब में आम आदमी पार्टी, झारखंड में जेएमएम और 4 जग्यों में कांग्रेस की सरकार के 16 सांसद थे। इनमें से डीएमके, टीएमसी, जदयू और शिवसेना का एक घड़ा इंडिया अलायंस का दिस्ता है। यानी इनके लिए कांग्रेस को अपनी सीटें छोड़नी होंगी। सबसे बड़ा खतरा है कि कांग्रेस के लिए गठबंधन सरकार में नवर पर रही थी। डीएमके 24 और टीएमसी 23 सीटों के साथ तीसरे और चौथे नवर पर रहीं। शिवसेना के पास 19 और जदयू के 16 सांसद थे। इनमें से डीएमके, टीएमसी, जदयू और शिवसेना का एक घड़ा इंडिया अलायंस का दिस्ता है। यानी इनके लिए कांग्रेस को अपनी सीटें छोड़नी होंगी। सबसे बड़ा खतरा है कि गठबंधन सरकार में है। झारखंड और तमिलनाडु में भी कांग्रेस सरकार का दिस्ता है। रिजनल पार्टियों ने सरकार चला रही है, अरविंद केजरीवाल के बाद यहां से बदला रही है। रिजनल पार्टियों ने सरकार चला रही है, वहां सीटों का बंटवारा कांग्रेस के लिए मुश्किल होगा। ऐसे में देखना चाहिए कि कांग्रेस के लिए गठबंधन सरकार नहीं होगा, पर ताकि कितनी सीटें छोड़ा जाएं।



यूपी में कांग्रेस और कांग्रेस के साथ अलायंस के पक्ष में नहीं है।

अब तीनों पार्टियों इंडिया अलायंस में हैं। सभा के पास पिछले दो चुनावों में गठबंधन का हार के सबक है। यूपी में अब सपा-आरएलडी-कांग्रेस और अपना दल (कमेरावादी) का गठबंधन हो सकता है। सूरज के मुताबिक, कांग्रेस 10-20 सीटों की मांग कर सकती है। बाकी सातों सीटों के बंटवारे के साथ अलायंस को माथापच्ची करनी पड़ सकती है।

2022 के विधानसभा चुनाव में सपा और आरएलडी ने गठबंधन को सिर्फ 54 सीटें मिली थीं। कांग्रेस 114 सीटों पर चुनाव लड़ी और सिर्फ 7 जीत पाई। सपा ने 311 सीटों में चुनाव लड़ा और 47 सीटें जीती। इस हार के बाद कांग्रेस ने सपा से दूरी बना ली।

2022 के विधानसभा चुनाव में सपा और आरएलडी ने गठबंधन को सिर्फ 54 सीटें मिली थीं। कांग्रेस के बाद यहां से जीत पाई। सपा ने 311 सीटों में चुनाव लड़ा और 47 सीटें जीती। इस हार के बाद कांग्रेस ने सपा से दूरी बना ली।

यूपी में कांग्रेस को ज्यादा समाजवादी पार्टी ने 2017 का विधानसभा चुनाव साथ लड़ा। इस गठबंधन को सिर्फ 54 सीटें मिली थीं। कांग्रेस 114 सीटों पर चुनाव लड़ी और सिर्फ 7 जीत पाई। सपा ने 311 सीटों में चुनाव लड़ा और 47 सीटें जीती। इस हार के बाद कांग्रेस ने सपा से दूरी बना ली।

यूपी में कांग्रेस के साथ अलायंस के पक्ष में नहीं है।

अब तीनों पार्टियों इंडिया अलायंस में हैं। सभा के पास पिछले दो चुनावों में गठबंधन का हार के सबक है। यूपी में अब सपा-आरएलडी-कांग्रेस और अपना दल (कमेरावादी) का गठबंधन हो सकता है। सूरज के मुताबिक, कांग्रेस 10-20 सीटों की मांग कर सकती है। बाकी सातों सीटों के बंटवारे के साथ अलायंस को माथापच्ची करनी पड़ सकती है। अभी सातों सीटों के बंटवारे के पक्ष में है।

यूपी में कांग्रेस को ज्यादा समाजवादी पार्टी ने 2017 का विधानसभा चुनाव साथ लड़ा। इस गठबंधन को सिर्फ 54 सीटें मिली थीं। कांग्रेस 114 सीटों पर चुनाव लड़ी और सिर्फ 7 जीत पाई। सपा ने 311 सीटों में चुनाव लड़ा और 47 सीटें जीती। इस हार के बाद कांग्रेस ने सपा से दूरी बना ली।

यूपी में कांग्रेस के साथ अलायंस के पक्ष में नहीं है।

अब तीनों पार्टियों इंडिया अलायंस में हैं। सभा के पास पिछले दो चुनावों में गठबंधन का हार के सबक है। यूपी में अब सपा-आरएलडी-कांग्रेस और अपना दल (कमेरावादी) का गठबंधन हो सकता है। सूरज के मुताबिक, कांग्रेस 10-20 सीटों की मांग कर सकती है। बाकी सातों सीटों के बंटवारे के साथ अलायंस को माथापच्ची करनी पड़ सकती है। अभी सातों सीटों के बंटवारे के पक्ष में है।

यूपी में कांग्रेस को ज्यादा समाजवादी पार्टी ने 2017 का विधानसभा चुनाव साथ लड़ा। इस गठबंधन को सिर्फ 54 सीटें मिली थीं। कांग्रेस 114 सीटों पर चुनाव लड़ी और सिर्फ 7 जीत पाई। सपा ने 311 सीटों में चुनाव लड़ा और 47 सीटें जीती। इस हार के बाद कांग्रेस ने सपा से दूरी बना ली।

यूपी में कांग्रेस के साथ अलायंस के पक्ष में नहीं है।

अब तीनों पार्टियों इंडिया अलायंस में हैं। सभा के पास पिछले दो चुनावों में गठबंधन का हार के सबक है। यूपी में अब सपा-आरएलडी-कांग्रेस और अपना दल (कमेरावादी) का गठबंधन हो सकता है। सूरज के मुताबिक, कांग्रेस 10-20 सीटों की मांग कर सकती है। बाकी सातों सीटों के बंटवारे के साथ अलायंस को माथापच्ची करनी पड़ सकती है। अभी सातों सीटों के बंटवारे के पक्ष में है।

यूपी में कांग्रेस को ज्यादा समाजवादी पार्टी ने 2017 का विधानसभा चुनाव साथ लड़ा। इस गठबंधन को सिर्फ 54 सीटें मिली थीं। कांग्रेस 114 सीटों पर चुनाव लड़ी और सिर्फ 7 जीत पाई। सपा ने 311 सीटों में चुनाव लड़ा और 47 सीटें जीती। इस हार के बाद कांग्रेस ने सपा से दूरी बना ली।

यूपी में कांग्रेस के साथ अलायंस के पक्ष में नहीं है।

अब तीनों पार्टियों इंडिया अलायंस में हैं। सभा के पास पिछले दो चुनावों में गठबंधन का हार के सबक है। यूपी में अब सपा-आरएलडी-कांग्रेस और अपना दल (कमेरावादी) का गठबंधन हो सकता है। सूरज के मुताबिक, कांग्रेस 10-20 सीटों की मांग कर सकती है। बाकी सातों सीटों के बंटवारे के साथ अलायंस को माथापच्ची करनी पड़ सकती है। अभी सातों सीटों के बंटवारे के पक्ष में है।

यूपी में कांग्रेस को ज्यादा समाजवादी पार्टी ने 2017 का विधानसभा चुनाव साथ लड़ा। इस गठबंधन को सिर्फ 54 सीटें मिली थीं। कांग्रेस 114 सीटों पर चुनाव लड़ी और सिर्फ 7 जीत पाई। सपा ने 311 सीटों में चुनाव लड़ा और 47 सीटें जीती। इस हार के बाद कांग्रेस ने सपा से दूरी बना ली।

यूपी में कांग्रेस के साथ अलायंस के पक्ष में नहीं है।

अब तीनों पार्टियों इंडिया अलायंस में हैं। सभा के पास पिछले दो चुनावों में गठबंधन का हार के सबक है। यूपी में अब सपा-आरएलडी-कांग्रेस और अपना दल (कमेरावादी) का गठबंधन हो सकता है। सूरज के मुताबिक, कांग्रेस 10-20 सीटों की मांग कर सकती है। बाकी सातों सीटों के बंटवारे के साथ अलायंस को माथापच्ची करनी पड़ सकती है। अभी सातों सीटों के बंटवारे के पक्ष में है।

यूपी में कांग्रेस को ज्यादा समाजवादी पार्टी ने 2017 का विधानसभा चुनाव साथ लड़ा। इस गठबंधन को सिर्फ 54 सीटें मिली थीं। कांग्रेस 114 सीटों पर चुनाव लड़ी और सिर्फ 7 जीत पाई। सपा ने 311 सीटों में चुनाव लड़ा और 47 सीटें जीती। इस हार के बाद कांग्रेस ने सपा से दूरी बना ली।

यूपी में कांग्रेस के साथ अलायंस के पक्ष में नहीं है।

अब तीनों पार्टियों इंडिया अलायंस में हैं। सभा के पास पिछले दो चुनावों में गठबंधन का हार के सबक है। यूपी में अब सपा-आरएलडी-कांग्रेस और अपना दल (कमेरावादी) का गठबंधन हो सकता है। सूरज के मुताब

